आज की मुरली का सार ---------- Date: 31-05-2014

बाबा ने कहा, पवित्र बनने में ही मनुष्यों को तकलीफ होती है और पवित्र बनने में बहुत ग्रेड्स हैं.

अगर ब्रह्मचर्य का पालन करने को ही संपूर्ण पवित्रता कहा जाता तो मैजोरिटी ब्राहमणॉ की ग्रेड्स सेम होनी चाहिए. लेकिन संपूर्ण पवित्रता कि व्याख्या बहुत डिप हैं. बाबा कहते हैं, पवित्रता में ही कहा न कहा कोई में किस प्रकार की, कोई में किस प्रकार की डिफेक्ट जरूर रह जाती हैं. और योग में डिफेक्ट पड़ने के कारण ही संपूर्ण पवित्रता धारण करने में भी आत्मा में भिन्न-भिन्न प्रकार की डिफेक्ट रह जाती हैं.

बाबा ने आज तक पवित्रता के बारे में जो मुख्य बातें बताई हैं, उसे एक बार रिपिट कर लेंगे. बाबा ने बताया हैं की संपूर्ण पवित्र ब्राहमण आत्मा की मुख्य धारणाये नीचे मुझब हैं, जो हमें अपने में चेक करनी हैं.

1. पवित्रता धारण करने के लिये वृति को पावन बनाना हैं. पावन वृति ही दृष्टि को शुद्ध करती हैं. पावन वृति और शुद्ध दृष्टि वाली आत्मा की कृति पवित्र हो जाती हैं. मन-वचन-कर्म से संबन्ध-सम्पर्क में आनेवाली सर्व आत्माओं प्रति हमारी वृति भाई-भाई की बनानी हैं.

2. व्यर्थ संकल्प से मुक्त. व्यर्थ चिंतन भी अपवित्रता हैं.

3. स्व से और परमपिता-परमात्मा से संपूर्ण ऑनेस्ट. संपूर्ण सत्यता पर चलने वाली आत्मा ही संपूर्ण पवित्र हैं.

4. खाना खाने से पहले या पानी पीने से पहले, बाबा की याद में दृष्टि दे खाने को पवित्रता की किरणें दो बाद में ही खाने को या पानी को ग्रहण करो. खाना खाते समय बाबा की याद में रह कर ही खाना हैं. गीता में भी लिखा हैं जैसा अन्न वैसा मन. अगर अन्न हमारा शुद्ध हैं तो मन चंचलता नहीं करेगा.

5. रात को सोने से पहले, बाबा को याद करके सोना हैं, जिसे की स्वप्न में भी अपवित्रता न आये.

याद रहे की पवित्रता मेरे ब्राहमण जीवन की पूंजी हैं. जैसे हमारे बचत खाते में रखी हुई पूंजी को हम संभाल कर रखते हैं, वैसे ही मुझे पवित्रता की शक्ति को संभाल कर रखनी हैं.

हम सब जानते हैं की हमारी प्यारी मम्मा, पवित्रता में ब्रह्मा बाबा से भी आगे हैं इस लिए आज भी भक्ति में भक्त राधे-कृष्ण या लक्ष्मी-नारायण कह कर पहले माता बाद में पिता का नाम लेते हैं.

ॐ शांति.

BK Atmabhai -- a.brahmin.soul@gmail.com